

दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग का ईएमसी कॉर्पोरेशन से समझौता

नई दिल्ली (वस) : सूचना प्रबंधन एवं चयन के क्षेत्र में अग्रणी ईएमसी कॉर्पोरेशन और दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग (डीसीई) के बीच मंगलवार को एक शिक्षा करार पर हस्ताक्षर हुए। इस करार के बाद डीसीई अगले शिक्षा सत्र जुलाई 2006 से सूचना प्रबंधन और संचयन पर आधारित पाठ्यक्रम

सूचना प्रबंधन व संचयन के कोर्स भी चलाएगा डीसीई

को भी अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल करेगा। करार पर कॉलेज के प्रधानाचार्य प्रो. बी. पी. शर्मा और ईएमसी कॉर्पोरेशन के निदेशक पाल टी. ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री शीला दीक्षित, सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव प्रकाश कुमार और ईएमसी इंडिया व सार्क के राष्ट्रीय प्रबंधक मनोज चुग भी मौजूद थे।

इस अवसर पर शीला दीक्षित ने कहा कि शिक्षा संस्थानों और उद्योगों में परस्पर

सहयोग से एक नए युग की शुरुआत हो रही है। आने वाले समय में व्यावसायिक विशेषज्ञों की कमी दूर होगी। इसका फायदा दिल्ली सरकार के कार्यालयों को भी होगा।

दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग देश का पहला संस्थान है जिसकी ईएमसी शैक्षणिक कार्यक्रम के तहत नोडल

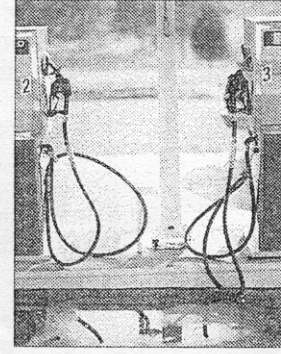
संस्था के रूप में स्थापना हुई है। इस कार्यक्रम के तहत दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ईएमसी को इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के लिए क्षेत्र के अन्य शिक्षा संस्थानों की पहचान करने और उनका चयन करने में मदद करेगी। ईएमसी इसके लिए अध्ययन सूची, पाठ्यक्रम निर्धारण, प्रशिक्षण सामग्री, विषय संकाय और पाठ्यक्रम की परीक्षा के प्रश्नपत्रों और परीक्षा संचालन में अन्य सभी प्रकार का सहयोग भी करेगी।

डीसीई ने ईजाद किया बायोडीजल रिएक्टर

नई दिल्ली (आईएनएस) : भारत में वैकल्पिक ईंधन की बढ़ती मांग के मद्देनजर दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग (डीसीई) ने एक बायोडीजल रिएक्टर विकसित किया है। यह रिएक्टर रोजाना 600 लीटर से अधिक जैव ईंधन का उत्पादन करने की क्षमता से लैस है।

कॉलेज में बायोडीजल शोध विभाग के प्रमुख नवीन कुमार ने आईएनएस से बातचीत करते हुए कहा कि भारत में यह अपनी किस्म का पहला रिएक्टर है और इसकी रोजाना उत्पादन क्षमता 600 लीटर है। नवीन कुमार मिकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर भी हैं। उन्होंने बताया कि उनकी 10 सदस्यों वाली टीम को यह प्रोजेक्ट पूरा करने में 5 महीने लगे। इस पर 3.5 लाख रुपये की लागत आई। जैव ईंधन के लाभ का जिक्र करते हुए, उन्होंने कहा कि यह ईंधन सामान्य ईंधन की तुलना में कहीं अधिक कारगर होता है। इसमें 10 फीसदी ऑक्सीजन होता है, जो हवा में

कार्बन डाई ऑक्साइड और दूसरी प्रदूषक गैसों व रसायनों के उत्सर्जन में कमी लाती है। उन्होंने कहा कि अगर एक वाक्य में कहा जाए तो यह जैव



ईंधन ईको फ्रेडली है।

उन्होंने बताया कि उनकी टीम ने 5 लीटर, 10 लीटर और 50 लीटर की क्षमता वाले छोटे रिएक्टर भी तैयार किए हैं, जबकि 1000 लीटर की क्षमता वाला रिएक्टर 5 से 6 महीनों के भीतर तैयार

हो जाएगा। एक ओर जहां गैरपारंपरिक ऊर्जा मंत्रालय ने 600 लीटर की क्षमता वाली इकाई के निर्माण में मदद दी है, तो वहीं पेट्रोलियम कंजरवेशन रिसर्च असोसिएशन (पीसीआरए) ने 1000 लीटर की क्षमता वाले रिएक्टर के लिए मददगार की भूमिका निभाने का फैसला किया। उन्होंने कहा कि पहले रिएक्टरों में एक वेसल ही हुआ करता था, लेकिन नए रिएक्टर में 6 वेसल हैं। ये रिएक्टर 8 घंटे में कम से कम 200 लीटर बायोडीजल तैयार कर सकता है। फिलहाल बायो फ्यूल के लिए लैबरटरी में करांजा और जैटोफा के बीजों का इस्तेमाल हो रहा है।

कुमार ने बताया कि हम वर्ष 2000 से ही इस प्रोजेक्ट पर शोध कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ऐसी तकनीक ग्रामीण क्षेत्रों के लिए अधिक लाभदायक होगी। उन्होंने कहा कि अगर ग्रामीणों को इस तकनीक के बारे में प्रशिक्षित किया गया तो ग्रामीण इलाकों में विकास प्रक्रिया और जोर पकड़ेगी।

दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में बायो-डीजल रिएक्टर इजाद

आईएनएस, नई दिल्ली

भारत में वैकल्पिक ईंधन की बढ़ती मांग को ध्यान में रखकर दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग ने एक बायो-डीजल रिएक्टर विकसित किया है। यह रिएक्टर रोजाना 600 लीटर से अधिक जैव ईंधन का उत्पादन करने की क्षमता से लैस है।

कॉलेज में बायो-डीजल शोध विभाग के प्रमुख नवीन कुमार ने कहा कि भारत में यह अपनी किस्म का पहला रिएक्टर है। नवीन कुमार मिकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर भी हैं। उन्होंने बताया कि उनके 10 टीम सदस्यों को इस परियोजना को पूरा करने में 5 महीने लगे। इस पर साढ़े तीन लाख रुपये की लागत आई। जैव-ईंधन के लाभ का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि यह ईंधन सामान्य ईंधन की तुलना में कहीं अधिक कारगर होता है। इसमें 10 फीसदी ऑक्सीजन होता है, जो हवा में कार्बन डाई ऑक्साइड और अन्य प्रदूषक गैसों के उत्सर्जन में कमी में सहायक है।

उन्होंने बताया कि उनकी टीम ने पांच लीटर, दस लीटर और पचास लीटर की क्षमता वाले छोटे रिएक्टर भी तैयार किए हैं, जबकि एक हजार लीटर की क्षमता

■ रोजाना 600 लीटर से अधिक जैव ईंधन के उत्पादन की क्षमता

वाला रिएक्टर 5-6 महीनों के भीतर तैयार हो जाएगा। एक ओर जहां गैर-पारंपरिक ऊर्जा मंत्रालय ने 600 लीटर की क्षमता वाली इकाई के निर्माण में मदद दी है, वहीं पेट्रोलियम कंजरवेशन रिसर्च एसोसिएशन (पीसीआरए) ने एक हजार लीटर की क्षमता वाले रिएक्टर के लिए मददगार की भूमिका निभाने का फैसला किया।

उन्होंने कहा कि पहले रिएक्टरों में एक वेसेल ही हुआ करता था, लेकिन नए रिएक्टर में 6 वेसेल हैं। ये रिएक्टर 8 घंटे में कम से कम 200 लीटर बायो-डीजल तैयार कर सकता है। फिलहाल जैव ईंधन के लिए प्रयोगशालाओं में करांजा और जैटोफा के बीजों का इस्तेमाल हो रहा है। कुमार ने बताया कि हम 2000 से ही इस परियोजना पर शोध कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ऐसी तकनीकी ग्रामीण क्षेत्रों के लिए अधिक लाभदायक होगी।